IJARSCT

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 4, July 2026 Impact Factor: 8.2

जगदीशचंद्र के उपन्यासों में स्त्री संघर्ष और सामाजिक यथार्थ का चित्रण

खुशबू कुमारी[1] and डॉ. **दीपशिखा शर्मा**[2]

[1]शोधार्थी, [2]सह प्राध्यापक

हिंदी-विभाग

सनराइज विश्वविद्यालय अलवर, राजस्थान

सारांश: *हिंदी उपन्यास परंपरा में जगदीशचंद्र का साहित्य सामाजिक यथार्थ, ग्रामीण जीवन, वर्गीय विषमता, जातिगत शोषण और हाशिए के समुदायों के संघर्ष को अभिव्यक्त करने के लिए विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है। उनके उपन्यासों में समाज के उन वर्गों और व्यक्तियों को कथा के केंद्र में स्थान मिलता है, जिनकी आवाज मुख्यधारा के साहित्य और सामाजिक संरचना में प्रायः दबा दी जाती रही है। विशेष रूप से 'धरती धन न अपना', 'नरककुंड में वास', 'आधा पुल', 'कभी न छोड़े खेत', 'मुट्ठी भर कांकर', 'टुंडा लाट' और 'घास गोदाम' जैसी रचनाओं में सामाजिक विषमता और संघर्ष की विविध स्थितियाँ दिखाई देती हैं। उपलब्ध साहित्यिक स्रोतों के अनुसार 'धरती धन न अपना' का प्रकाशन 1972 में हुआ और इसमें पंजाब के दोआबा क्षेत्र के दलित तथा भूमिहीन ग्रामीण जीवन की त्रासदी को केंद्र में रखा गया है।*

जगदीशचंद्र के कथा-साहित्य में स्त्री केवल पुरुष पात्रों के जीवन की सहायक उपस्थिति नहीं है, बल्कि वह सामाजिक, आर्थिक, जातिगत और पितृसत्तात्मक संरचनाओं से संघर्ष करने वाली स्वतंत्र मानवीय सत्ता के रूप में सामने आती है। 'धरती धन न अपना' की ज्ञानो इसका महत्त्वपूर्ण उदाहरण है। वह प्रेम, स्वाभिमान और मानवीय गरिमा की आकांक्षा रखने वाली स्त्री है, किंतु जातिगत रूढ़ियों, सामंती मानसिकता और सामाजिक नियंत्रण के कारण उसका जीवन त्रासद परिणति तक पहुँचता है। इस प्रकार जगदीशचंद्र स्त्री-संघर्ष को केवल लैंगिक समस्या के रूप में नहीं देखते, बल्कि उसे जाति, वर्ग, आर्थिक निर्भरता और सामाजिक प्रतिष्ठा से जोड़कर प्रस्तुत करते हैं। यह दृष्टि उनके सामाजिक यथार्थवाद को अधिक व्यापक बनाती है।

मुख्य संकेतक : जगदीशचंद्र, स्त्री-संघर्ष, सामाजिक यथार्थ, दलित विमर्श, ग्रामीण समाज, जातिवाद, पितृसत्ता, ज्ञानो, 'धरती धन न अपना'।

I. प्रस्तावना

हिंदी साहित्य में सामाजिक यथार्थवादी उपन्यास परंपरा ने भारतीय समाज के अंतर्विरोधों को अभिव्यक्ति देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। स्वतंत्रता के बाद भारतीय समाज में राजनीतिक स्वतंत्रता के साथ सामाजिक समानता, आर्थिक न्याय और मानवीय गरिमा के प्रश्न अधिक तीव्र होकर सामने आए। साहित्यकारों ने ग्रामीण समाज, श्रमिक वर्ग, दलित समुदाय, भूमिहीन किसान, स्त्रियों और अन्य वंचित वर्गों की समस्याओं को साहित्यिक विमर्श का हिस्सा बनाया। इसी परंपरा में जगदीशचंद्र का कथा-साहित्य विशिष्ट स्थान रखता है। उनका साहित्य सामान्य जन के जीवन-संघर्ष, अभाव, शोषण और जिजीविषा को केंद्र में रखता है। उनके उपन्यासों में जीवन को उसके सामाजिक अंतर्विरोधों के साथ देखने का प्रयास दिखाई देता है।

जगदीशचंद्र का साहित्यिक जीवन कई दशकों तक विस्तृत रहा। उनके प्रमुख उपन्यासों में 'यादों का पहाड़' (1966), 'धरती धन न अपना' (1972), 'आधा पुल' (1973), 'कभी न छोड़े खेत' (1976), 'मुट्ठी भर कांकर' (1976), 'टुंडा लाट' (1978), 'घास गोदाम' (1985) और बाद के उपन्यासों में 'नरककुंड में वास' तथा 'जमीन अपनी तो थी' उल्लेखनीय हैं।

उनके उपन्यासों का सबसे महत्त्वपूर्ण पक्ष यह है कि वे सामाजिक यथार्थ को केवल बाहरी घटनाओं के स्तर पर प्रस्तुत नहीं करते, बल्कि उसके भीतर सक्रिय सत्ता-संबंधों और सामाजिक मानसिकता को भी उजागर करते हैं। जाति-व्यवस्था, भूमिहीनता, आर्थिक निर्भरता, सामंती वर्चस्व, श्रम-शोषण, छुआछूत और स्त्री-शोषण उनके कथा-संसार में परस्पर जुड़े हुए प्रश्न हैं। इसलिए उनके साहित्य में स्त्री-संघर्ष को समझने के लिए व्यापक सामाजिक संदर्भ को समझना आवश्यक है।

II. शोध-पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन मुख्यतः वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक और पाठ-आधारित पद्धति पर आधारित है। इसमें जगदीशचंद्र के प्रमुख उपन्यासों को प्राथमिक स्रोत मानते हुए उनके स्त्री-पात्रों, सामाजिक परिवेश, संवादों, घटनाओं और कथानक संरचना का विश्लेषण किया गया है। इसके साथ हिंदी साहित्य के सामाजिक यथार्थवाद, दलित विमर्श, स्त्री-विमर्श और ग्रामीण समाज से संबंधित आलोचनात्मक सामग्री को सहायक स्रोत के रूप में देखा गया है। अध्ययन में 2010–2021 के बीच उपलब्ध आलोचनात्मक और शैक्षिक स्रोतों को विशेष संदर्भ-सीमा के रूप में रखा गया है। 'धरती धन न अपना' के संबंध में उपलब्ध अध्ययन इसे पंजाब के दोआबा क्षेत्र के ग्रामीण दलित जीवन की सामाजिक-आर्थिक त्रासदी से जोड़ते हैं।

III. जगदीशचंद्र के उपन्यासों में सामाजिक यथार्थ

जगदीशचंद्र का उपन्यास-साहित्य भारतीय ग्रामीण समाज के वास्तविक जीवन से गहरे रूप में जुड़ा हुआ है। उनके यहाँ गाँव केवल प्राकृतिक सौंदर्य या लोक-संस्कृति का प्रतीक नहीं है, बल्कि वह विभिन्न सामाजिक शक्तियों के संघर्ष का क्षेत्र भी है। 'धरती धन न अपना' में घोड़ेवाहा गाँव के माध्यम से पंजाब के दोआबा क्षेत्र की सामाजिक संरचना का चित्रण किया गया है। इस गाँव में जातिगत विभाजन, आर्थिक विषमता और सामाजिक वर्चस्व के संबंध एक-दूसरे से जुड़े हुए दिखाई देते हैं।

इस उपन्यास में दलित समुदाय को मुख्य गाँव से अलग स्थित 'चमादड़ी' में रहने वाला समुदाय दिखाया गया है। उनके जीवन में गरीबी, सामाजिक बहिष्कार, श्रम-शोषण और अपमान की अनेक स्थितियाँ उपस्थित हैं। इस प्रकार सामाजिक यथार्थ केवल गरीबी का चित्रण नहीं है, बल्कि यह बताता है कि गरीबी और सामाजिक पिछड़ापन किन संस्थागत तथा सांस्कृतिक संरचनाओं के कारण बना रहता है।

जगदीशचंद्र के यथार्थवाद की विशेषता यह है कि वे शोषित समुदाय को केवल दया का पात्र नहीं बनाते। उनके पात्रों में संघर्ष, आत्मसम्मान और परिवर्तन की आकांक्षा भी दिखाई देती है। काली का चरित्र इसी दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। शहर से लौटने के बाद उसमें आत्मविश्वास और स्वाभिमान का भाव दिखाई देता है, किंतु गाँव की जातिगत संरचना उसे उसकी जाति की सीमा से बाहर स्वीकार नहीं करती। इस प्रकार व्यक्ति की आधुनिक चेतना और परंपरागत सामाजिक व्यवस्था का संघर्ष उपन्यास में प्रभावी ढंग से सामने आता है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 4, July 2026
Impact Factor: 8.2

IV. स्त्री-संघर्ष का सामाजिक संदर्भ

जगदीशचंद्र के उपन्यासों में स्त्री-संघर्ष को केवल पुरुष और स्त्री के संबंध तक सीमित करके नहीं देखा जा सकता। विशेष रूप से दलित स्त्री के संदर्भ में जाति और लिंग दोनों प्रकार के शोषण एक साथ सक्रिय होते हैं। आर्थिक रूप से कमजोर स्त्रियाँ सामंती और उच्चवर्गीय शक्तियों पर निर्भर रहती हैं, जिसके कारण उनका शोषण और अधिक आसान हो जाता है। 'धरती धन न अपना' में दलित स्त्रियों के साथ होने वाला यौन और सामाजिक शोषण इसी व्यापक व्यवस्था का हिस्सा है।

दलित स्त्री की स्थिति यहाँ दोहरे या तिहरे दबाव से निर्मित होती है। एक ओर वह जातिगत भेदभाव का सामना करती है, दूसरी ओर पुरुष प्रधान सामाजिक व्यवस्था उसके शरीर और श्रम पर अधिकार स्थापित करने का प्रयास करती है। तीसरी ओर आर्थिक अभाव उसे शोषक वर्ग पर निर्भर बनाए रखता है। इसीलिए जगदीशचंद्र के स्त्री-संघर्ष को व्यापक सामाजिक न्याय के प्रश्न से अलग नहीं किया जा सकता।

V. ज्ञानो : स्त्री-अस्मिता और संघर्ष का प्रतीक

'धरती धन न अपना' की ज्ञानो जगदीशचंद्र के साहित्य में स्त्री-संघर्ष का अत्यंत महत्त्वपूर्ण चरित्र है। ज्ञानो केवल प्रेमिका के रूप में नहीं, बल्कि आत्मसम्मान और स्वतंत्र व्यक्तित्व वाली स्त्री के रूप में सामने आती है। वह काली के प्रति भावनात्मक लगाव रखती है, लेकिन उसके व्यक्तित्व में स्वाभिमान भी है। उपलब्ध आलोचनात्मक अध्ययन में उल्लेख मिलता है कि ज्ञानो अपने संबंधों और सम्मान के प्रश्न पर मुखर प्रतिक्रिया देती है तथा काली द्वारा अवमानना किए जाने पर उसका प्रतिरोध करती है।

ज्ञानो का संघर्ष इसलिए महत्त्वपूर्ण है क्योंकि उसका व्यक्तिगत जीवन सामाजिक रूढ़ियों से नियंत्रित होता है। उसका प्रेम समाज द्वारा स्वीकार्य नहीं है। जातिगत संबंधों और पारंपरिक सामाजिक मान्यताओं के कारण उसकी व्यक्तिगत इच्छा को स्वतंत्र मान्यता नहीं मिलती। इस प्रकार ज्ञानो का प्रेम भी सामाजिक सत्ता के विरुद्ध प्रतिरोध का रूप ग्रहण कर लेता है।

उसकी त्रासदी यह बताती है कि पितृसत्तात्मक समाज स्त्री की इच्छा और निर्णय को किस सीमा तक नियंत्रित करता है। ज्ञानो के जीवन में प्रेम, स्वाभिमान और सामाजिक स्वतंत्रता की आकांक्षा है, लेकिन सामाजिक संरचना उसे स्वतंत्र जीवन जीने का अवसर नहीं देती। इस कारण उसका चरित्र व्यक्तिगत त्रासदी से आगे बढ़कर सामाजिक व्यवस्था की आलोचना का माध्यम बन जाता है।

VI. स्त्री और जातिगत शोषण

जगदीशचंद्र की विशेषता यह है कि वे स्त्री-शोषण को जातिगत संरचना के साथ जोड़कर प्रस्तुत करते हैं। 'धरती धन न अपना' में दलित स्त्रियों के प्रति सवर्ण समाज का व्यवहार जातिगत सत्ता और लैंगिक सत्ता के संयुक्त प्रभाव को व्यक्त करता है। उपलब्ध अध्ययन के अनुसार चौधरियों द्वारा दलित स्त्रियों का यौन शोषण उनकी आर्थिक निर्भरता और सामाजिक कमजोर स्थिति से जुड़ा हुआ है।

यहाँ स्त्री का शरीर भी सत्ता-संबंधों का क्षेत्र बन जाता है। जिस वर्ग के पास भूमि, धन और सामाजिक प्रतिष्ठा है, वह कमजोर वर्ग की स्त्रियों पर भी नियंत्रण स्थापित करता है। इस स्थिति में स्त्री की व्यक्तिगत इच्छा का कोई स्वतंत्र मूल्य नहीं रह जाता। जगदीशचंद्र इस व्यवस्था को सामान्य या स्वाभाविक मानकर प्रस्तुत नहीं करते, बल्कि उसके अमानवीय रूप को उजागर करते हैं।

इस दृष्टि से उनका उपन्यास सामाजिक न्याय की माँग करने वाला साहित्य बन जाता है। स्त्री की मुक्ति जाति और आर्थिक

असमानता से मुक्ति के प्रश्न से जुड़ जाती है।

VII. आर्थिक निर्भरता और स्त्री-शोषण

स्त्री-संघर्ष का एक महत्त्वपूर्ण आधार आर्थिक निर्भरता है। ग्रामीण समाज में भूमिहीन और गरीब परिवारों की स्त्रियाँ प्रायः श्रम के माध्यम से परिवार की अर्थव्यवस्था में योगदान देती हैं, लेकिन उनके श्रम को पर्याप्त सम्मान और आर्थिक स्वतंत्रता नहीं मिलती। आर्थिक निर्भरता उन्हें सामाजिक शक्ति-संबंधों में कमजोर बनाती है।

'धरती धन न अपना' में दलित समुदाय का आर्थिक जीवन मुख्यतः श्रम और उच्चवर्गीय ग्रामीण व्यवस्था पर निर्भर है। इस आर्थिक संरचना का प्रभाव स्त्रियों पर भी पड़ता है। उपलब्ध आलोचनात्मक सामग्री में स्पष्ट किया गया है कि दलित स्त्रियों की आर्थिक निर्भरता उनके सामाजिक और यौन शोषण को बढ़ाती है।

इस प्रकार जगदीशचंद्र के यहाँ आर्थिक प्रश्न और स्त्री प्रश्न अलग-अलग नहीं हैं। स्त्री की वास्तविक स्वतंत्रता के लिए आर्थिक स्वावलंबन आवश्यक है—यह विचार उनके सामाजिक यथार्थ की अंतर्धारा में दिखाई देता है।

VIII. पितृसत्ता और सामाजिक रूढ़ियाँ

जगदीशचंद्र के उपन्यासों में पितृसत्ता केवल पुरुषों के व्यवहार में दिखाई देने वाली समस्या नहीं है; यह सामाजिक संस्थाओं, परंपराओं और सामूहिक मानसिकता में भी उपस्थित है। स्त्री के प्रेम, विवाह, यौनिकता और सामाजिक संबंधों पर समुदाय का नियंत्रण इस मानसिकता को स्पष्ट करता है।

ज्ञानो और काली के संबंधों का विरोध इसका महत्त्वपूर्ण उदाहरण है। उपलब्ध अध्ययन के अनुसार उनके संबंध को लेकर दलित समाज की रूढ़ियाँ भी सक्रिय हैं और उन्हें सामाजिक रिश्तों की परंपरागत सीमाओं में बाँधने का प्रयास किया जाता है।

इस स्थिति से स्पष्ट होता है कि शोषण केवल बाहरी वर्ग द्वारा नहीं होता। कभी-कभी शोषित समुदाय के भीतर भी ऐसी रूढ़ियाँ मौजूद रहती हैं, जो व्यक्ति की स्वतंत्रता को सीमित करती हैं। जगदीशचंद्र इस अंतर्विरोध को अत्यंत यथार्थवादी ढंग से प्रस्तुत करते हैं।

IX. स्त्री की अस्मिता और आत्मसम्मान

जगदीशचंद्र के स्त्री-पात्रों की सबसे उल्लेखनीय विशेषताओं में से एक उनकी अस्मिता-बोध है। वे पूरी तरह निष्क्रिय या निरीह पात्र नहीं हैं। वे अपनी परिस्थितियों से जूझती हैं, संबंधों पर प्रतिक्रिया देती हैं और अपने सम्मान की रक्षा करने का प्रयास करती हैं।

ज्ञानो का चरित्र इस संदर्भ में विशेष रूप से उल्लेखनीय है। वह प्रेम करती है, लेकिन प्रेम के नाम पर अपने आत्मसम्मान को समाप्त नहीं करती। उसका व्यक्तित्व यह संकेत देता है कि स्त्री को केवल त्याग और सहनशीलता के पारंपरिक आदर्शों से नहीं आँका जाना चाहिए। उसका अपना मन, इच्छा और निर्णय भी महत्त्वपूर्ण है।

इस दृष्टि से जगदीशचंद्र का साहित्य स्त्री को मानवीय गरिमा के साथ देखने की माँग करता है। स्त्री की समस्या केवल 'स्त्री की समस्या' नहीं बल्कि सामाजिक न्याय और मानवाधिकार की समस्या बन जाती है।

X. ग्रामीण समाज और स्त्री की स्थिति

ग्रामीण समाज के चित्रण में जगदीशचंद्र ने स्थानीय जीवन, सामाजिक संबंधों, आर्थिक गतिविधियों और सांस्कृतिक मान्यताओं को कथा का महत्त्वपूर्ण हिस्सा बनाया है। 'धरती धन न अपना' में पंजाब के दोआबा क्षेत्र के ग्रामीण परिवेश की सामाजिक-सांस्कृतिक विशेषताओं का विस्तृत चित्रण मिलता है।

गाँव की सामाजिक संरचना में जाति और आर्थिक स्थिति व्यक्ति की प्रतिष्ठा तय करती है। स्त्रियों के लिए यह स्थिति और जटिल हो जाती है क्योंकि उनकी सामाजिक पहचान प्रायः परिवार और जाति के साथ जोड़कर देखी जाती है। गरीब और दलित स्त्रियों की स्वतंत्र पहचान का संकट अधिक गहरा है।

जगदीशचंद्र इस ग्रामीण समाज का रोमानी चित्र प्रस्तुत नहीं करते। वे उसकी कठोरता, विषमता और अंतर्विरोधों को सामने लाते हैं। यही कारण है कि उनका ग्रामीण यथार्थवाद सामाजिक आलोचना का रूप ग्रहण कर लेता है।

XI. सामाजिक यथार्थ और दलित चेतना

'धरती धन न अपना' को दलित जीवन की त्रासदी के महत्त्वपूर्ण उपन्यास के रूप में देखा गया है। इसमें दलित समुदाय के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन का चित्रण है। छुआछूत, अपमान, श्रम-शोषण, गरीबी और सामाजिक बहिष्कार जैसी समस्याएँ कथा में निरंतर उपस्थित रहती हैं।

दलित स्त्री की स्थिति इस पूरे सामाजिक यथार्थ का सबसे संवेदनशील पक्ष है। वह जातिगत अपमान के साथ-साथ लैंगिक हिंसा और आर्थिक निर्भरता का सामना करती है। इसलिए दलित चेतना और स्त्री चेतना के बीच एक स्वाभाविक संबंध दिखाई देता है।

जगदीशचंद्र का योगदान यह है कि उन्होंने हाशिए के पात्रों को कथा का केंद्र बनाया और उनके अनुभवों को सामाजिक इतिहास की तरह प्रस्तुत किया। इस प्रक्रिया में साहित्य सामाजिक दस्तावेज की भूमिका भी निभाता है।

XII. भाषा और शिल्प में सामाजिक यथार्थ

जगदीशचंद्र के सामाजिक यथार्थ की शक्ति उनकी भाषा और शिल्प में भी दिखाई देती है। उनके पात्रों की भाषा उनके सामाजिक परिवेश के अनुरूप है। संवादों में ग्रामीण जीवन की सहजता, स्थानीय बोली और सामाजिक मानसिकता का प्रभाव दिखाई देता है। 'धरती धन न अपना' के संबंध में उपलब्ध अध्ययन भी इसके संवादों में ग्रामीण लोगों की सोच और स्थानीय भाषिक विशेषताओं की उपस्थिति को रेखांकित करते हैं।

इस प्रकार भाषा केवल संप्रेषण का माध्यम नहीं रहती, बल्कि वह सामाजिक वर्ग और सांस्कृतिक पहचान का संकेतक बन जाती है। पात्र जिस भाषा में बोलते हैं, उससे उनकी सामाजिक स्थिति, मानसिकता और अनुभवों का पता चलता है।

जगदीशचंद्र का चरित्र-चित्रण भी बहुआयामी है। पात्रों का विकास उनके कार्यों, संवादों और पारस्परिक संबंधों के माध्यम से होता है। उपलब्ध अध्ययन में काली, ज्ञानो, चाची प्रतापी, जीतू, मंगू और नंदसिंह जैसे पात्रों के माध्यम से उपन्यास की सामाजिक संरचना को समझने की संभावना रेखांकित की गई है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 4, July 2026
Impact Factor: 8.2

XIII. प्रमुख विषयों का संक्षिप्त विश्लेषण

क्रम	विषय	जगदीशचंद्र के उपन्यासों में अभिव्यक्ति
1	स्त्री-संघर्ष	सामाजिक और पितृसत्तात्मक नियंत्रण के विरुद्ध संघर्ष
2	जातिगत शोषण	दलित समुदाय का सामाजिक बहिष्कार और अपमान
3	आर्थिक शोषण	भूमिहीनता, श्रम-निर्भरता और गरीबी
4	यौन शोषण	कमजोर वर्ग की स्त्रियों पर सत्ता का दुरुपयोग
5	स्त्री-अस्मिता	आत्मसम्मान, इच्छा और स्वतंत्र व्यक्तित्व
6	ग्रामीण यथार्थ	गाँव की सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक संरचना
7	सामाजिक रूढ़ियाँ	प्रेम, विवाह और जातिगत संबंधों पर नियंत्रण
8	प्रतिरोध	शोषण के विरुद्ध चेतना और संघर्ष
9	दलित चेतना	हाशिए के समुदाय के अनुभवों को केंद्र में लाना
10	मानवीय गरिमा	समानता और सम्मान की आकांक्षा

XIV. निष्कर्ष

जगदीशचंद्र के उपन्यासों में स्त्री-संघर्ष और सामाजिक यथार्थ एक-दूसरे से गहरे रूप में जुड़े हुए हैं। उनका साहित्य ग्रामीण समाज के उन यथार्थों को सामने लाता है जिन्हें लंबे समय तक साहित्यिक और सामाजिक विमर्श में पर्याप्त स्थान नहीं मिला। जाति, वर्ग, आर्थिक निर्भरता, सामंती मानसिकता और पितृसत्ता उनके कथा-संसार में अलग-अलग समस्याएँ नहीं हैं, बल्कि एक-दूसरे को प्रभावित करने वाली सामाजिक शक्तियाँ हैं।

विशेष रूप से 'धरती धन न अपना' में ज्ञानो का चरित्र स्त्री-संघर्ष की मार्मिक अभिव्यक्ति है। वह प्रेम, आत्मसम्मान और स्वतंत्र अस्तित्व की आकांक्षा रखने वाली स्त्री है, लेकिन जातिगत और पितृसत्तात्मक सामाजिक संरचनाएँ उसके जीवन को नियंत्रित करती हैं। उसकी त्रासदी यह प्रमाणित करती है कि सामाजिक रूढ़ियाँ व्यक्ति की स्वतंत्रता को किस प्रकार नष्ट कर सकती हैं। उपलब्ध आलोचनात्मक अध्ययन भी ज्ञानो के जीवन और उसकी दुखांत परिणति को सामंती सामाजिक मूल्यों तथा स्त्री की असुरक्षित स्थिति से जोड़ते हैं।

जगदीशचंद्र का सामाजिक यथार्थवाद इसलिए महत्त्वपूर्ण है कि वे शोषित स्त्री और दलित समुदाय को केवल करुणा के पात्र के रूप में प्रस्तुत नहीं करते। उनके पात्रों में संघर्ष, स्वाभिमान और परिवर्तन की चेतना भी मौजूद है। 'धरती धन न अपना' में दलित जीवन के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक पक्षों का चित्रण इस बात को स्पष्ट करता है कि सामाजिक शोषण बहुआयामी होता है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 4, July 2026 Impact Factor: 8.2

अंततः कहा जा सकता है कि जगदीशचंद्र के उपन्यासों में स्त्री-संघर्ष भारतीय ग्रामीण समाज के व्यापक सामाजिक संघर्ष का अभिन्न अंग है। उनकी रचनाएँ स्त्री की अस्मिता, सामाजिक समानता, आर्थिक स्वतंत्रता और मानवीय गरिमा के प्रश्नों को सामने लाती हैं। इस दृष्टि से जगदीशचंद्र का उपन्यास-साहित्य हिंदी के सामाजिक यथार्थवादी और दलित-संवेदना-सम्बद्ध साहित्य में उल्लेखनीय स्थान रखता है।

संदर्भ

1. अग्रवाल, एस. (2010). हिंदी उपन्यासों में दलित जीवन और सामाजिक यथार्थ. *हिंदी अनुशीलन, 16*(2), 45–52।
2. कुमार, आर. (2011). समकालीन हिंदी उपन्यास और सामाजिक यथार्थ. *शोध-दिशा, 5*(1), 78–86।
3. कुमार, एस. (2020). जगदीशचंद्र के 'धरती धन न अपना' में ग्रामीण जीवन का चित्रण. *शोध-दिशा, 14*(3), 120–128।
4. गुप्ता, के. (2018). स्त्री अस्मिता और सामाजिक संरचना का अंतर्संबंध. *नारी विमर्श, 6*(1), 38–47।
5. चौधरी, एस. (2017). हिंदी उपन्यास और दलित स्त्री विमर्श. *अनुसंधान, 14*(2), 101–109।
6. चौहान, आर. (2021). 'धरती धन न अपना' में दलित जीवन और सामाजिक विषमता. *शोध एवं समीक्षा, 11*(2), 75–84।
7. मिश्रा, एन. (2015). जगदीशचंद्र के उपन्यासों में सामाजिक चेतना. *हिंदी साहित्य और संस्कृति, 7*(1), 54–62।
8. यादव, आर. (2016). *जगदीशचंद्र के उपन्यासों में दलित जीवन.* नई दिल्ली: साहित्य प्रकाशन।
9. वर्मा, पी. (2014). ग्रामीण जीवन और हिंदी उपन्यास का सामाजिक यथार्थ. *शोध समीक्षा, 9*(2), 91–99।
10. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग. (2020). *हिंदी साहित्य में समकालीन विमर्श.* नई दिल्ली: यूजीसी।
11. शर्मा, वी. (2012). हिंदी साहित्य में दलित विमर्श की प्रासंगिकता. *साहित्य विमर्श, 8*(2), 112–120।
12. सिंह, एम. (2013). हिंदी उपन्यासों में स्त्री चेतना और संघर्ष. *समकालीन साहित्य, 12*(3), 65–73।
13. सिंह, डी. (2019). *धरती धन न अपना: सामाजिक यथार्थ और दलित चेतना.* दिल्ली: वाणी प्रकाशन।